किशोरावस्था की समस्याएं

किशोरावस्था को तनाव और तूफान की भी अवस्था कहते हैं। यही वह अवस्था है जब किशोर न तो बालक रहता है और न पूर्ण प्रौढ़ बन पाता है

यही वह अवस्था है जिसमें वे अपना अधिकतम विकास भी कर सकते है और अपना सर्वस्व गवां भी सकते हैं। इस अवस्था में किशोर को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनमें प्रमुख हैं-

1) स्वतंत्रता की समस्या —

किशोरावस्था मे आत्मप्रकाशन की भावना बड़ी प्रबल होती है। वे माता पिता के बन्धन मे बन्धकर रहना नही चाहते। यदि उन पर नियंत्रण लगाया जाता है तो वे विद्रोह करने के लिए तैयार रहते हैं। जो माता-पिता किशोरों की इस स्वाभाविक प्रवृति को अनुचित रूप से दबाते है, उनके बालको में बैचेनी और निराशा उत्पन्न हो जाती है और वे उच्छृंखल और आवारा हो

जाते हैं।

2) स्थिरता और सांमजस्य की समस्या → किशोर बालक-बालिकाओं मे अस्थायित्व होता है। उनका व्यवहार बहुत ही परिवर्तनशील होता है, उसे यह भ्रान्ति होती है कि वह दूसरे व्यक्तियों के आकर्षण का केन्द्र है। लेकिन ऐसा हमेशा नहीं होता। वातावरण मे सामंजस्य मे कठिनाई उसके शारीरिक और मानसिक विकास के कारण भी होती है। इस समस्या के कारण कभी-कभी उसका व्यवहार अपाढ़नीय और अशोभनीय हो जाता है।

3) विरोधी मनोभावों की समस्या ⇒ किशोरावस्था मे किशोर बालक-बालिकाओ में विरोधी मनोभाव चरमसीमा पर होते हैं। किसी क्षण वे बहुत ही सक्रिय दिखायी देते हैं और क्षण अत्यधिक आलसी और निष्क्रिय। कभी वे अत्यधिक उत्साह से परिपूर्ण आत्म विरोध के घोतक होते हैं और इसका कारण संवेगात्मक

ज्ञान योग का अभाव होता है।

4) प्रबल जिज्ञासा की समस्या — किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध में जिज्ञासा की प्रबलता हो जाती है, जब किशोर बालक-बालिकाएं प्रौढ़ जीवन विषयक ज्ञान की खोज में लग जाते हैं। विपरीत लिंग के लोगों के संबंध में उनकी जिज्ञासा बढ़ती जाती है क्योंकि उनके विषय में प्राप्त होने वाले अनुभव रुचिपूर्ण और आनंददायक होते हैं।

5) आत्म गौरव की समस्या → किशोरों में आत्मगौरव की भावना का विकास होता है। इसके प्रमुख कारण वे जहां भी होते हैं, अपना सम्मान चाहते हैं। परिवार में विद्यालय में, समूह में वह अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहते हैं। और आत्मगौरव की भावना की संतुष्टि हो। ऐसे न होने पर वे विद्रोह पर उतारू हो जाते हैं।

6) आत्म निर्भरता की समस्या - इस अवस्था में किशोर आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनना चाहते हैं। वे माता-पिता पर बोझ नहीं बनना चाहते। अनेक किशोर धन प्राप्ति के लिए अनैतिक और अपराधिक कार्यों में लिप्त हो जाते हैं।

7) कल्पनाशील क्रियाओं की समस्या - इस अवस्था में किशोर कल्पना जगत में विचरण करते रहते हैं। वे अपना अलग ही कल्पना का संसार संजोये रहते हैं। वे दिवास्वप्नों में खोये रहते हैं। जिन वस्तुओं का अभाव उन्हें होता है, उसको कल्पना से पूरा कर लेते हैं।

8) व्यवसाय के चयन → किशोरों की एक प्रमुख समस्या व्यवसाय का चुनाव करने की होती है। इस अवस्था में वे अपने

लिए उपयुक्त व्यवसाय को चुनने, उसके लिए तैयारी करने, उसमें प्रवेश प्राप्त करने और उसमें उन्नति करने के लिए अत्यधिक चिन्तित रहते हैं।

9) नैतिक और सामाजिक मूल्यों की समस्या -
किशोर बालक - बालिकाओं के सामने नैतिक और सामाजिक मूल्यों की समस्या भी अत्यन्त कठिन होती है। माता-पिता, अध्यापक उससे से इस बात की अपेक्षा करते हैं। और किशोर इसे पूरा नहीं कर पाता। जिससे सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता।

10) यौन समस्याएं -
इस अवस्था में कोई भी किशोर लड़का - लड़की इस समस्या से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।